पाठ-2

समाज-सेवा

– पदुमलाल पुन्नालाल वख्शी

आइए सीखें

◆ समाज के संगठन का महत्व ◆ परोपकार की भावना का विकास ◆ निबंध विधा से परिचय ◆ विलोम शब्दों का ज्ञान ◆ विशेषण और उसके प्रकारों से परिचय।

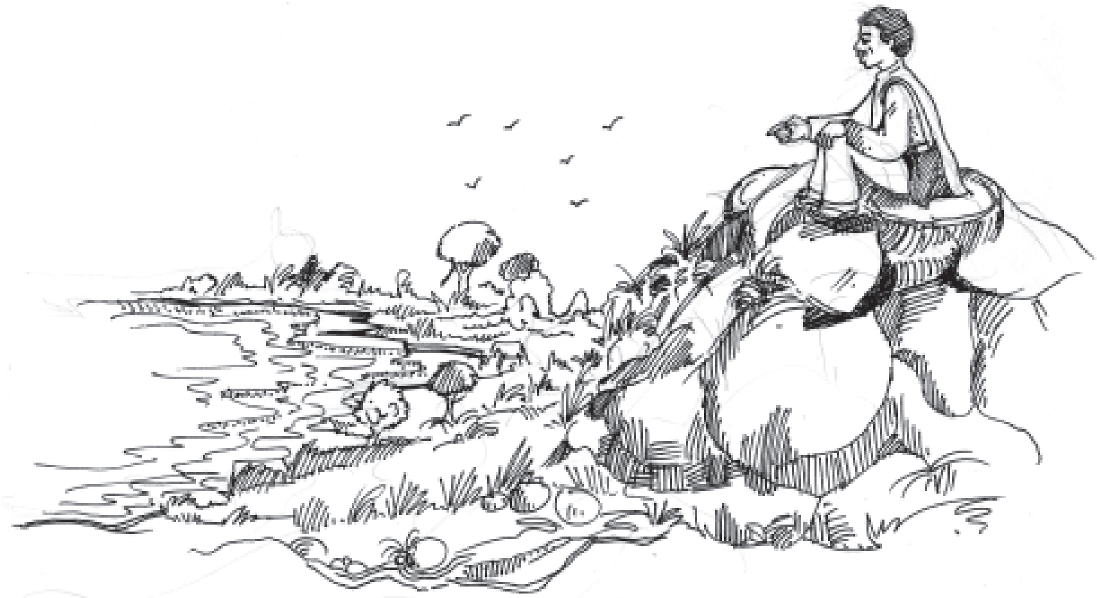

मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है जो अकेला नहीं रह सकता। उसे अपनी रक्षा के लिए समाज का संगठन करना ही पड़ता है। यों तो और भी कई प्राणी हैं, जो अपना दल बनाकर रहा करते हैं, परन्तु उन प्राणियों के दल और मनुष्य के समाज में यह भेद है कि मनुष्य ने अपनी बुद्धि द्वारा अपने सामाजिक जीवन का निरंतर विकास किया है। देश, काल और अवस्था के अनूकूल उसने अपने समाज में यथेष्ट परिवर्तन किए हैं और ऐसे परिवर्तन अब भी होते जा रहे हैं। इसी से मनुष्य-समाज उन्नतिशील है; और अन्य प्राणियों का दल सैकड़ों वर्षों के बाद भी अपनी स्थिति में कोई उन्नति या परिवर्तन नहीं कर सका। अपनी उन्नति के लिए एक साथ मिलकर काम करने की प्रवृत्ति से प्रेरित होकर जो दल बनाया जाता है, उसी को हम समाज कहते हैं।

शिक्षण संकेत

◆ शिक्षक छात्रों को दूसरों की सेवा करने की प्रेरणा दें ◆ देश के प्रमुख सुधारकों की जीवन गाथा को बताएँ ◆ हमारे मौलिक कर्त्तव्य और अधिकारों से छात्रों को अवगत कराएँ ।

समाज के भीतर समता का भाव रहना आवश्यक है। जहाँ समता का अभाव है, वहाँ समाज में दृढ़ता नहीं है, क्योंकि किसी प्रकार की असमानता होने पर, भेदभाव होने पर पारस्परिक ईर्ष्या-द्वेष आदि भाव अवश्य होते हैं। तब उनसे फूट भी पैदा होगी और एकता का नाश होने पर समाज की अवनति भी होगी। समाज की अवनति होने पर व्यक्ति विशेष की अवनति भी अनिवार्य है। सच तो यह है कि समाज और व्यक्ति का पारस्परिक दृढ़ सम्बन्ध है। एक की उन्नति दूसरे की उन्नति है। समाज की उन्नति होने से व्यक्ति की उन्नति होगी; और व्यक्ति की उन्नति से समाज की उन्नति होगी। न तो समाज व्यक्ति की उपेक्षा कर सकता है, और न व्यक्ति ही समाज की अवहेलना कर सकता है।

मनुष्यों में जैसी स्वार्थ-बुद्धि होती है, वैसी परार्थ-बुद्धि भी होती है। मनुष्यों में हम जिन गुणों का विकास देखकर मुग्ध हो जाते हैं, वे सभी गुण उस परार्थ-बुद्धि द्वारा प्रकट होते हैं। दया, प्रेम, स्नेह, सहानुभूति, त्याग, सेवा आदि भाव एकमात्र परार्थ-चिंता के कारण हमारे हृदयों में उत्पन्न होते हैं। हमें अपने स्वार्थ-साधन से जो सुख और संतोष मिलता है, वही आनंद हमें परार्थ-चिंतन और परोपकार से मिलता है। इस परार्थ-चिंतन में मनुष्य का कल्याण है, इसलिए यदि कहा जाए कि परार्थ-चिंतन में उच्चकोटि की स्वार्थ-चिंता ही है तो यह सर्वथा उचित ही है। हमें अपने कल्याण के लिए, अपनी उन्नति के लिए, अपने सुख के लिए और दूसरों के सुख के लिए सुखकर कार्य करने पड़ते हैं। ऐसे ही कामों को हम सेवा कहते हैं। सेवा का अर्थ है—दूसरों का दुःख दूर करना, दूसरों को सुख पहुँचाना।

समाज दो-चार व्यक्तियों का समूह नहीं है, किन्तु व्यक्ति उसके अंग अवश्य हैं। किसी भी व्यक्ति की सेवा करना समाज की सेवा करना है। यदि हम किसी कुपथगामी व्यक्ति को किसी भी प्रकार सुपथ पर ला सकें तो उससे हमने समाज की सेवा अवश्य की है। यदि हम किसी एक का अज्ञान दूर कर सकें तो हम किसी अंश तक समाज की सेवा कर चुके, परन्तु यथार्थ समाज-सेवा वह है जो किसी व्यक्ति विशेष को सुख पहुँचाने की दृष्टि से नहीं, वरन् अधिकांश लोगों को अधिकतम सुख पहुँचाने के लिए की जाती है।

समाज में एक ओर जीवन की स्थिरता है, तो दूसरी ओर परिवर्तनशीलता। समाज जब तक दृढ़तापूर्वक किसी नियम का पालन नहीं करेगा, तब तक उसकी उन्नति नहीं होगी। इसीलिए अधिकतर लोगों का विचार करके समाज की एक मर्यादा बना दी जाती है। सभी व्यक्तियों को उस मर्यादा का पालन करना पड़ता है। चाहे किसी व्यक्ति को कष्ट ही क्यों न हो, तो भी वह समाज की मर्यादा का उल्लंघन नहीं करेगा। यदि वह ऐसा करेगा तो समाज द्वारा निंदनीय होगा। अधिक की भलाई का ध्यान रख हमें उसके लिए एक की भलाई की चिंता छोड़नी पड़ती है, परन्तु कुछ समय के बाद अवस्था विशेष में परिवर्तन होने के कारण समाज में दोष उत्पन्न हो जाते हैं। तब उन दोषों को दूर करने के लिए समाज की मर्यादा भंग करनी पड़ती है और फिर नई मर्यादा बनानी पड़ती है। जो लोग समाज को नए पथ का दर्शन कराते हैं, उन्हें कष्ट सहना पड़ता है। सभी तरह के कष्टों को सहकर वे समाज के कल्याण के लिए अपने कार्यों में दृढ़तापूर्वक लगे रहते हैं। अंत में अपनी सत्यता के कारण उन्हें विजय-लाभ होता है और वे समाज के सुधारक कहे

जाते हैं। वे सभी समाज के सेवक होते हैं।

समाज में समता का भाव होने पर भी सर्वत्र विषमता ही देखी जाती है। समाज में दीनों और दुखियों का अभाव नहीं रहता। कुछ लोग अंगहीन होने के कारण असहाय होते हैं। कुछ लोग बिलकुल अनाथ हो गए हैं। कुछ लोग अज्ञ होते हैं। कुछ लोग कुपथगामी होते हैं। इन सबकी सेवा करना, इन सबके हित के लिए काम करना समाज-सेवा है। इस देश के समाज में आजकल गरीबों के उत्थान की जो चेष्टा की जा रही है, यह समाज-सेवा ही है। उसी प्रकार नारियों की दुरवस्था दूर करने के लिए या कुष्ठ आदि रोगग्रस्त लोगों की यातना दूर करने के लिए चेष्टाएँ की जा रही हैं। ये सभी समाज की सेवाएँ हैं। देश के सभी सक्षम नवयुवकों का यह कर्तव्य है कि वे ऐसी सेवाओं में भाग लें। इससे समाज की उन्नति होगी; साथ-ही-साथ अन्य लोगों में उच्च गुणों का विकास होगा। इसीलिए हमारे शास्त्रों में कहा गया है कि पर-सेवा से बढ़कर कोई सेवा नहीं।

शब्दार्थ

यथेष्ट=जितना आवश्यक हो। **वृत्ति**=स्वभाव। **पारस्परिक**=आपसी। **अवहेलना**=उपेक्षा, ध्यान न देना। **सर्वथा**=हर तरह से, बिलकुल। **कुपथगामी**=कुमार्ग पर चलने वाला। **निंदनीय**=निंदा के योग्य। **अज्ञ**=अज्ञानी, मूर्ख। **हित**=भलाई। **चेष्टा**=कोशिश। **दुरवस्था**=दुः+अवस्था-(दुर्+अवस्था), बुरी हालत।

अनुभव विस्तार

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. **(क) सही जोड़ी बनाइए—**

- जीवन - अवनति
- समता - कुपथ
- उन्नति - मृत्यु
- सुपथ - विषमता

(ख) दिए गए शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

- जिसने सम्पत्ति संचित कर ली वह .... का पात्र हो जाता है। (आदर/अनादर)
- समाज और व्यक्ति का पारस्परिक .... सम्बन्ध है। (दृढ़/लचीला)
- समाज-सेवा अधिकांश लोगों को .... सुख पहुँचाने के लिए की जाती है। (अधिकतम/न्यूनतम)
- हमारे शास्त्रों में कहा गया है कि .... से बढ़कर कोई सेवा नहीं। (स्व-सेवा/पर-सेवा)

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में दीजिए—

(क) समाज-सेवा पाठ में सेवा के कितने प्रकारों की चर्चा की गई है?

(ख) पाठ में बुद्धि के कौन-कौन से दो प्रकार बताए गए हैं?

(ग) सेवा का क्या अर्थ है?

(घ) समाज सुधारक किन गुणों के कारण विजयी होता है?

(ङ) किस प्रकार की सेवा को श्रेष्ठ माना गया है?

लघु उत्तरीय प्रश्न

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन से पाँच वाक्यों में दीजिए—

(क) मनुष्य अन्य प्राणियों से किस प्रकार भिन्न है?

(ख) व्यक्ति और समाज में परस्पर किस प्रकार का सम्बन्ध होता है?

(ग) समाज-सेवा से क्या आशय है?

(घ) समाज सेवा पाठ में नवयुवकों के क्या कर्तव्य बताए गए हैं?

(ङ) समाज में समता का अभाव होने पर क्या होता है?

भाषा की बात

4. नीचे दिए गए शब्दों का शुद्ध उच्चारण कीजिए—

यथेष्ट, ईर्ष्या, द्वेष, परार्थ, दुरवस्था, प्रवृत्ति, दृढ़, मर्यादा, सर्वत्र।

5. नीचे दिए गए शब्दों की वर्तनी शुद्ध कीजिए—

अर्थसिद्धी, प्रसंशा, अनिर्वाय, व्याक्ती, परीवर्तन, इस्थिरता, आभाव, दोस।

6. रोगग्रस्त शब्द 'रोग' और 'ग्रस्त' के योग से बना है, जिसका अर्थ है रोग से पीड़ित। इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दों में 'ग्रस्त' जोड़कर शब्द बनाइए—

(क) शोक	(ख) क्षति ....
(ग) दु:ख	(घ) चिन्ता ....
(ङ) शाप	(च) भय ....

7. नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं, जो एक-दूसरे के विलोम है। सही विलोम शब्दों की जोड़ी बनाइए—

दु:ख, अज्ञान, सफलता, आवश्यक, उपेक्षा, संतोष, सत्यता, समर्थ, अपेक्षा, असंतोष, ज्ञान, सुख, असमर्थ, असत्यता, असफलता, अनावश्यक।

....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....

ध्यान से पढ़िए

1. उसने पीली कमीज़ पहनी है।
2. गोष्ठी में बीस छात्र सम्मिलित हुए।
3. दादाजी ने थोड़ी ज़मीन दान में दे दी।
4. यह कलम मेरे पिताजी विदेश से लाए हैं।

ऊपर दिए वाक्यों में रेखांकित शब्द 'पीली' कमीज के गुण की 'बीस' छात्रों की संख्या की, 'थोड़ी' जमीन की मात्रा की और 'यह' शब्द कलम की ओर संकेत कर उसकी विशेषता बता रहे हैं।

अतः ऐसे शब्द जो संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, विशेषण कहलाते हैं।

और भी समझिए

रक्षाबंधन भाई-बहन के पवित्र रिश्तों का त्योहार है। रागिनी का भाई मनीष सौ किलोमीटर दूर शहर से रक्षाबंधन पर घर आ रहा है। रागिनी रंगबिरंगे कपड़े पहने सुंदर राखी लेखकर प्रतीक्षा कर रही है। उसकी कई इच्छाएँ हैं जो वह भाई को बताएगी। दोपहर बीती, थोड़ा-थोड़ा दिन भी ढलने लगा। विचारों में डूबी बहन को अचानक पद-चाप सुनाई दी। उसने सामने मनीष को देखा तो आँखें भर आईं। आँखों में आँसू भरे देखकर मनीष ने कहा-यही रागिनी है जो बचपन में मुझे चुप कराती थी और दोनों ने एक-दूसरे को गले लगा लिया।

ऊपर दिए गद्यांश में रेखांकित शब्द 'पवित्र', 'रगबिरंगे' और 'सुंदर' शब्द क्रमशः रिश्तों, कपड़ों तथा राखी के गुणों की विशेषता बता रहे हैं। 'सौ किलोमीटर' तथा छः महीने परिमाण के द्वारा दूरी तथा समय की विशेषता बता रहे हैं। इसी प्रकार 'दोपहर' तथा 'थोड़ा-थोड़ा' संख्या की विशेषता बता रहे हैं जबकि 'यही' शब्द रागिनी की ओर संकेत कर उसकी विशेषता बता रहा है।

इस प्रकार विशेषण चार प्रकार के होते हैं।

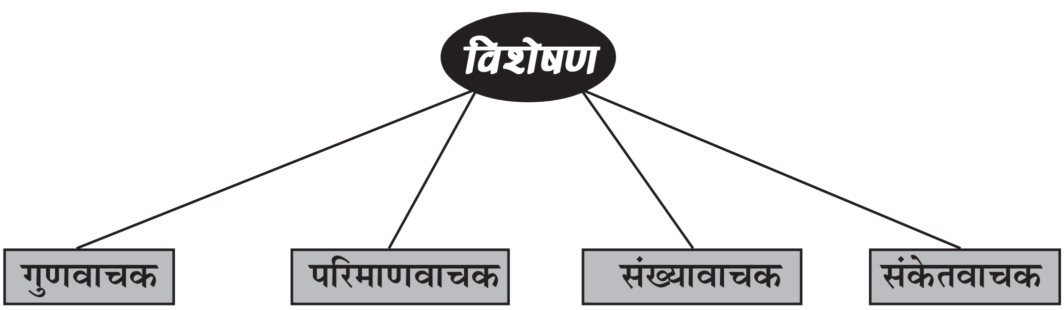

- **गुणवाचक विशेषण :** वे शब्द जो किसी संज्ञा या सर्वनाम के गुण, दोष, रंग, आकार, गंध अवस्था आदि की विशेषता बताते हैं, गुणवाचक विशेषण कहलाते हैं। जैसे-काला, पीला, अच्छा आदि।
- **परिमाणवाचक विशेषण :** जिन शब्दों से संज्ञा या सर्वनाम की माप-तौल संबंधी विशेषता प्रकट होती है, उन्हें परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं। जैसे-पाँच दिन, सात फिट आदि।
- **संख्यावाचक विशेषण :** वे शब्द जो संज्ञा या सर्वनाम की संख्या के द्वारा विशेषता बताते हैं। संख्यावाचक विशेषण कहलाते हैं। जैसे-दस, बीस, कुछ, थोड़ा आदि।
- **संकेतवाचक विशेषण :** जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम से पूर्व आकर उनकी ओर संकेत करते हैं उन्हें संकेतवाचक विशेषण कहते हैं। इसे सार्वनामिक विशेषण भी कहते हैं। जैसे-वह हाथी, यह बालक आदि।

8. पाठ में आए निम्नलिखित वाक्यों में से विशेषण शब्द छाँटकर उनके प्रकार लिखिए—

(क) सैकड़ों वर्षों से कोई उन्नति या परिवर्तन नहीं हुआ।

(ख) समाज दो-चार व्यक्तियों का समूह नहीं है।

(ग) लोगों में उच्च गुणों का विकास होगा।

(घ) व्यक्तियों की जो मर्यादाएँ हैं उन्हें उसका पालन करना चाहिए।

(ङ) कुछ लोग अज्ञ होते हैं।

(च) कुपथगामी व्यक्ति को सुपथ के रास्ते पर जाना ही सभ्य समाज की पहचान है।

अब करने की बारी

- अपने आसपास ग्राम/नगर में संचालित 'समाजसेवा से सम्बन्धित' किसी संस्था/कार्यालय में जाकर, वहाँ की गतिविधियों की जानकारी प्राप्त कीजिए।
- किसी अनाथालय, बाल सुधार गृह अथवा वृद्धाश्रम में जाकर वहाँ की हो रही समाज सेवा को ध्यान से देखिए और अपने अनुभव लिखिए।
- अपने विद्यालय में बागवानी/ईको क्लब के अन्तर्गत एक वाटिका लगाकर उसकी देखभाल कीजिए।

❑❑